

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA)

प्रलिस के लिये:

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA), आर्थिक और पर्यावरण लेखा प्रणाली (SEEA), सतत् विकास लक्ष्य (SDG), सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB), CAG।

मेन्स के लिये:

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) - इसका महत्त्व, भारत की पहल और इसके कार्यान्वयन में चुनौतियाँ।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [भारत के नयितरक और महालेखा परीक्षक](#) ने कहा है कि नवंबर 2022 तक प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA) पर रिपोर्ट जारी की जाएगी।

- यह ज़िम्मेदार उपयोग की नगिरानी में मदद करने के लिये लेखा प्रणाली विकसित करने का एक प्रयास है, जो स्थिरता की ओर ले जाएगा।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (NRA)

परचिय:

- प्राकृतिक संसाधन लेखांकन आर्थिक गतिविधियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों की कमी और पर्यावरण क्षरण के मूल्य का आकलन करने की एक प्रक्रिया है।
- NRA की अवधारणा प्राकृतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों और देश की आर्थिक प्रगति के बीच घनिष्ठ अंतःक्रिया को समझने हेतु उभरी थी।
- यह इस अवधारणा पर आधारित है कि किसी संसाधन का मापन उसके बेहतर प्रबंधन की ओर ले जाता है।

ऐतहासिक परिदृश्य:

- NRA के लिये पहला कदम मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (स्टॉकहोम सम्मेलन), 1970 में तब उठाया गया जब आर्थिक विकास और पर्यावरणीय गतिवट के बीच संबंधों पर पहली बार चर्चा की गई।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित ब्रंटलैंड आयोग ने वर्ष 1987 में पर्यावरण और आर्थिक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ संबंध के विचार को व्यक्त किया, जिसके बाद पर्यावरण लेखांकन एवं वर्ष 1992 में रियो डी जनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ।

NRA को बढ़ावा देने हेतु पहल:

वैश्विक स्तर पर पहल:

- संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का शीर्षक- "ट्रांसफॉर्मिंग अवर वर्ल्ड; द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" (25 सितंबर, 2016) जिससे 190 से अधिक देशों की मंजूरी मिली, को प्राकृतिक संसाधन खातों की तैयारी की आवश्यकता है।
 - भारत इस संकल्प का एक हस्ताक्षरकर्ता है।
- संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2012 में [आर्थिक और पर्यावरण लेखा प्रणाली \(SEEA\)](#) को अपनाया। यह NRA के लिये नवीनतम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत ढाँचा है।
 - ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, फ्रांस और जर्मनी जैसे लगभग 30 देशों ने पर्यावरण लेखांकन को अपनाने में विभिन्न डिग्री हासिल की है।
- यूरोपीय संघ द्वारा [वित्तपोषित पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं \(NCAVES\) परियोजना का प्राकृतिक पूंजी लेखा और मूल्यांकन](#), संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग (UNSD), [संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम \(UNEP\)](#) तथा [जैवविविधता के सम्मेलन \(CBD\)](#) के सचिवालय द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया गया है।
 - भारत इस परियोजना में भाग लेने वाले पाँच देशों में से एक है, अन्य देश ब्राज़ील, चीन, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको हैं।
 - यह प्राकृतिक पूंजी के स्टॉक और प्रवाह को मापने एवं रिपोर्ट करने के लिये व्यवस्थित तरीका प्रदान करने हेतु लेखांकन ढाँचे का

उपयोग करने के प्रयासों को कवर करने वाला व्यापक शब्द है।

■ **भारत-वशिष्ट पहल:**

- CAG ने वर्ष 2002 में सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य नर्णय लेने की गुणवत्ता और सार्वजनिक जवाबदेही को बढ़ाने के लिये सरकारी लेखांकन तथा वृत्तीय ररिपोर्टिंग के मानकों में सुधार करना था।
 - इसमें भारत सरकार में सभी लेखा सेवाओं के प्रतनिधि, RBI, ICAI और राज्य सरकारों जैसे नयामक प्राधिकरण शामिल हैं।
- भारत का CAG प्रधान ऑडिट संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय नकियाय का भी सदस्य है, जसिं WGEA (पर्यावरण लेखा परीक्षा पर कार्य समूह) कहा जाता है, जसिने सुझाव दया (वर्ष 2010) कलिखा परीक्षा संस्थानों को अपने देशों को प्राकृतिक संसाधन लेखांकन को अपनाने में सहायता करनी चाहयि।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन का महत्त्व:

■ **अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच अंतरसंबंध:**

- पर्यावरणीय संसाधनों का लेखांकन गैर-नवीकरणीय क्षति की मात्रा नरिधारित करता है और वास्तविक रूप में विकास के नरिधारण में सहायता करता है।

■ **नीति नरिधारण में सहायता- सुदृढ डेटाबेस:**

- नीति नरिमाताओं को उनके नरिणयों के संभावित प्रभाव को समझने में मदद करना।

■ **सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) का प्रबंधन:**

- NRA **सतत् विकास लक्ष्यों** के साथ गहन रूप से अंतरसंबंधित हैं कयोंकि 17 में से 4 लक्ष्य प्राकृतिकसंसाधनों के प्रबंधन और उनके लेखांकन से संबंधित हैं।

■ **जलवायु परिवर्तन का सामना:**

- जलवायु परिवर्तन की नगिरानी, माप और वश्लेषण के लयि परसिंपत्तिएवं प्रवाह लेखा को एक उपयोगी ढाँचे के रूप में मान्यता दी गई है।

■ **अंतर्राष्ट्रीय प्रतबिद्धताएँ:**

- सतत् विकास लक्ष्यों को पूरा करने के अलावा यह भारत को परसिंपत्तिलेखा के गठन में वशिष्ट देशों के समूह का हसिसा बनने में सहायता प्रदान करेगा।

प्राकृतिक संसाधनों के लेखांकन से संबंधित चुनौतियाँ:

- राज्य के अधिकारियों के उचति प्रशक्तिषण और क्षमता नरिमाण का अभाव है।
- परसिंपत्तिलेखांकन के गठन में सीमाएँ- डेटा की आवधकितता का मानचत्तिरण।
- संसाधनों के लयि डेटा संग्रह में कई एजेंसयि शामिल हैं; यह डेटा साझाकरण/डेटा संघर्ष के मुद्दों को जन्म दे सकता है।

स्रोत:बज़िनेस स्टैंडर्ड